This is the subtitle of PDF, Use long text here.

# रघुवीर सहाय

डा.सुजाता गुप्ता
हिंदी विभाग
इंटरमीडिएट १२

असंगठित राजनीति का देश झेलते लोगों की समस्याओं से ~~को~~ साक्षात्कार होता ~~मिलता~~ है रघुवीर सहाय की कविताओं में। भारतीय लोकतंत्र से उपजी विसंगतियाँ और देश की जनता की दयनीय स्थिति — रघुवीर सहाय की रचनाओं में उभरते हुए दिखाई पड़ते हैं। कवि ने जीवन के सामान्य दृश्यों को अपने प्रभावक्षेत्र में समाहित किया है। जीवन और उसकी ~~दर्द~~ विसंगतियाँ इनकी कविताओं में कभी व्यंग्य कभी दर्द कभी विडम्बना बनकर अंदर ही घिसटती चली जाती हैं। राजनीति पर कटाक्ष इनका प्रिय शगल रहा है। यह व्यंग्य केवल तात्कालीन कमजोरी या गुदगुदाने भर को नहीं है, बल्कि व्यवस्था की नाकामी है, कुछ न कर सकने की छटपटाहट है। कविता सोचने भर से आगे बढ़ बातों के पीछे के अर्थ को भी कुरेदती है। कवि केवल जानकारी भर नहीं देता, बल्कि तथ्यों की भी परख ~~करना~~ करना चाहता है।

खबरें जब अयबद्ध होती हैं, ~~उनका स्वरूप बहुत कुछ दृश्य~~ तब दृश्यपट रघुवीर सहाय की कविताओं जैसा होता है।

प्रेमचंद के अनुसार, "वह (साहित्यकार) देशभक्ति और राजनीति के पीछे चलनेवाली सचाई भी नहीं, बल्कि उनके आगे मशाल दिखाती हुई चलनेवाली सचाई है।"

This is the subtitle of PDF, Use long text here.